शिव चालीसा

जय गणेश गिरिजासुवन,मंगल मूल सुजान,
कहत अयोध्यादास तुम,देउ अभय वरदान|

जय गिरिजापति दीनदयाला,
सदा करत सन्तन प्रतिपाला|

भाल चन्द्रमा सोहत नीके,
कानन कुण्डल नागफनी के|

अंग गौर सिर गंग बहाये,
मुण्डमाल तन क्षार लगाये|

वस्त्र खाल बाघम्बर सोहे,
छवि को देख नाग मुनि मोहे|

मैना मातु कि हवै दुलारी,
वाम अंग सोहत छवि न्यारी|

कर त्रिशूल सोहत छवि भारी,
करत सदा शत्रून क्षयकारी|

नंदि गणेश सोहैं तहँ कैसे,
सागर मध्य कमल हैं जैसे|

कार्तिक श्याम और गणराऊ,
या छवि को कहि जात न काऊ|

देवन जबहिं जाय पुकारा,
तबहिं दुःख प्रभु आप निवारा|

किये उपद्रव तारक भारी,
देवन सब मिलि तुमहिं जुहारी|

तुरत षडानन आप पठायउ,
लव निमिष महँ मारि गिरियउ|

अप जलंधर असुर संहारा,
सुयश तुम्हार विदित संसारा|

त्रिपुरासुर सन युद्ध मचाई,
तबहिं कृपा करि लीन बचाई|

किया तपहिं भागीरथ भारी,
पूरव प्रतिज्ञा तासु पुरारी|

दानिन महँ तुम सम कोई नाहीं,
सेवक स्तुति करत सदाहीं|

वेद माहि महिमा तब गाई,
अकथ अनादि भेद नहीं पाई|

प्रकटी उदधि मंथन में ज्वाला,
जरत सुरासुर भए विहाला|

कीन्ह दया तहँ करी सहाई,
नीलकंठ तव नाम कहाई|

पूजन रामचन्द्र जब कीन्हा,
जीत के लंक विभीषण दीन्हा|

सहस कमल में हो रहे धारी,
कीन्ह परीक्षा तबहिं पुरारी|

एक कमल प्रभु राखेउ गोई,
कमल नयन पूजन चहँ सोई|

कठिन भक्ति देखी प्रभु शंकर,
भये प्रसन्न दिये इच्छित वर|

जय जय जय अनन्त अविनाशी,
करत कृपा सबके घट वासी|

दुष्ट सकल नित मोहि सतावैं,
भ्रमत रहौं मोहे चैन न आवै|

त्राहि त्राहि मैं नाथ पुकारो,
येहि अवसर मोहि आन उबारो|

ले त्रिशूल शत्रून को मरो,
संकट ते मोहि आन उबारो|

माता पिता भ्राता सब होई,
संकट में पूछत नहीं कोई|

स्वामी एक है आस तुम्हारी,
आय हरहु मम संकट भारी|

धन निर्धन को देत सदाहीं,
जो कोई जाँचे सो फल पाहीं|

अस् [illegible] म्हारी,

Be with God
Holy Drops

क्षमहु नाथ अब चूक हमारी|

शंकर हो संकट के नाशन,
विघ्न विनाशन मंगल कारन|

योगी यति मुनि ध्यान लगावैं,
नारद सारद शीश नवावैं|

नमो नमो जय नमः शिवाय,
सुर ब्रह्मादिक पार न पाय|

जो यह पाठ करे मन लाई,
ता पर होत हैं शम्भु सहाई|

ऋनियाँ जो कोई हो अधिकारी,
पाठ करै सो पावन हारी|

पुत्र होन कर इच्छा कोई,
निश्चय शिव प्रसाद तेहि होई|

पंण्डित त्रयोदशी को लावै,
ध्यान पूर्वक होम करावे|

त्रयोदशी व्रत करै हमेशा,
तन नहिं ताके रहै कलेशा|

धूप दीप नैवेध चढावै,
शंकर सम्मुख पाठ सुनावै|

जन्म जन्म के पाप नसावै,
अन्त धाम शिवपुर में पावै|

कहत अयोध्यादास आस तुम्हारी,
जानि सकल दुःख हरहु हमारी|